# एक अनोखी सी दास्तान हूँ मैं

एक अनोखी सी दास्तान हूँ मैं,
नहीं ढूँढ़ पाओगे कि, कहाँ हूँ मैं,
हर नज़र जिसे है ढूँढ़ती,
एक ऐसी कहकशा हूँ मैं।

है नज़र का धोखा, या ख्वाब हूँ मैं,
यूँ समझ लो कि, एक इत्तफ़ाक हूँ मैं,
रही ख्वाहिशों में ही सदा,
एक ऐसी आशियाँ हूँ मैं।

लौ जला के देखो बुझ गई वो,
बाकी रही सिर्फ ख्वाहिशें मगर,
जलती रही यूँ ही रात भर,
एक ऐसी शमा हूँ मैं।

नहीं ख्वाहिशों से दूर मैं,
है "आरज़ू" मेरे दिल में बहुत,
वो शाम भी जैसे ढल गई देखो,
एक ऐसी सहेर हूँ मैं।

क्यूँ डरु जिंदगी में क्या होगा,
हर वक्त क्यूँ सोचूँ कि, बस बुरा होगा,
बढ़ती रही बस अपनी मंजिलों की ओर,
एक ऐसी मनचली राही हूँ मैं।

कोई तो है मेरे अन्दर, जो मुझे संभाले हुए है
क्योंकि बेकरार सी रह कर भी बरकरार हूँ मैं,
नाजुक आवाज़ वो छम-छम की,
एक प्यारी पायल की झनकार हूँ मैं।

**एक अनोखी सी दास्तान हूँ मैं,**
**नहीं ढूँढ़ पाओगे कि, कहाँ हूँ मैं,**

**.....आरज़ू जलाली**